अनुभव

9

मिड-डे-मील एवं भूगोल का पठन-पाठन – एक अध्ययन

*अपर्णा पाण्डेय**

भारत में सरकारी विद्यालयों में कक्षा एक से आठवीं तक चलायी जा रही महत्वाकांक्षी योजना मिड-डे-मील बच्चों के शारीरिक विकास के साथ-साथ व्यक्तित्व विकास में भी सहायक है। इस योजना को सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का अंग बनाने का प्रयास राधा किशोरी राजकीय बालिका इंटर कॉलेज, रामनगर, वाराणसी में किया गया। विषम परिस्थितियों में भी भूगोल जैसे विषय को रुचिकर बनाना तथा छात्रों में उत्साहवर्धन करना शिक्षक का दायित्व बनता है, इसका निर्वाहण वह कैसे कर सकता है, जानने के लिए पढ़िए यह लेख।

भारत में विश्व की सबसे बड़ी योजना विद्यालयों में बच्चों को मिड-डे-मील (*मध्याह्न* भोजन) उपलब्ध कराने की योजना चल रही है। जिसमें देशभर के करीब 12 लाख विद्यालयों के 10. 54 करोड़ बच्चों को दोपहर का भोजन दिया जा रहा है। इस *मध्याह्न* भोजन का एक बड़ा उद्देश्य है कि प्राथमिक स्तर तक के बच्चों को निश्चित कैलोरी युक्त भोजन मिल सके। इसके साथ ही साथ धर्म तथा जातिगत भेदभाव भूलकर सभी मिल बैठकर एक साथ भोजन करें।

वर्ष 2012 में राधाकिशोरी बालिका विद्यालय, वाराणसी में *मध्याह्न* भोजन योजना एक नई शुरुआत थी। इसके पहले तक केवल सहकारी प्राथमिक विद्यालयों में ही यह योजना चलाई जा रही थी। लेकिन जुलाई 2012 से उन सभी विद्यालयों में जहाँ इण्टरमीडिएट कॉलेज के साथ यदि प्राथमिक विद्यालय भी हैं तो कक्षा पहली से आठवीं तक के सभी बच्चों को भोजन उपलब्ध कराने की व्यवस्था की गई। इस विद्यालय में कक्षा पहली से तीसरी तक करीब 150 बच्चे तथा कक्षा छठवीं से आठवीं

* *एसोसिएट प्रोफ़ेसर* (भूगोल), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली-110016

तक 350 बच्चे थे। अत: लगभग 500 बच्चों का भोजन प्रतिदिन तैयार करने के लिए तीन महिला रसोइयों की व्यवस्था की गई जो प्रतिमाह रू 1000/- की दर पर रखी गई थीं। ये सभी महिलाएँ विद्यालय में पढ़ने वाली छात्राओं की ही रिश्तेदार थीं।

मैं इसी विद्यालय में एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली की ओर से वर्ष 2012 में (16 जुलाई 2012 से 16 अक्तूबर 2012) क्षेत्र अनुभव के लिए गई जो कि भूगोल के पठन-पाठन पर आधारित था।

विद्यालय में लंच चौथे पीरियड के बाद होता था, जिसके लिए 30 मिनट का समय निर्धारित था। इतने कम समय में 500 बच्चों को भोजन कराना आसान काम नहीं था। सबसे पहले कक्षा पहली से पाँचवीं तक के बच्चे कतार बनाकर खड़े होते थे। उनको थाली या टिफिन जो भी उनके पास होता था उसमें खाना दिया जाता था। फिर वे अपनी-अपनी कक्षाओं में या कहीं भी इधर-उधर बैठकर खाते थे। इसके बाद कक्षा छठवीं से आठवीं तक के बच्चों की बारी आती थी।

सप्ताह में तीन दिन मुझे कक्षा सातवीं "बी' में पाँचवीं घंटी में भूगोल पढ़ाना होता था, जो ठीक लंच के बाद होती थी। उस समय तक कक्षा में ज़्यादातर बच्चों को खाना नहीं मिल पाता था, मिल भी जाता था तो वे खा नहीं पाते थे। कभी-कभी तो वे लाइन में लगने की तैयारी कर रहे होते थे। मेरे कक्षा में आ जाने पर संकोच के साथ लड़कियाँ कहती थीं कि, 'आप पढ़ाइए मैडम, हमें खाना नहीं खाना है।' मेरे ज़बरदस्ती करने पर वे लंच लेने जाती थीं। खाना इतना गरम होता था कि जल्दी खा भी नहीं सकती थीं। मैं उन्हें आश्वस्त करती थी कि आराम से खाओ और हम खाते-पीते पढ़ेंगे क्योंकि ऐसा तो रोज़ का रुटीन है। इस बात को

प्रधानाचार्या और अन्य शिक्षिकाओं के सामने रखा तो उनका कहना था कि लंच टाइम बढ़ाना तो बेहद मुश्किल है सारे पीरियड तो होने ही हैं अंतिम नौंवाँ पीरियड शारीरिक शिक्षा का है, जिसे केवल 15 मिनट ही मिल पाते हैं। इसलिए हम कुछ नहीं कर सकते।

खैर! अब हमें सोचना था कि इस निर्धारित समय में ही भूगोल कैसे पढ़ाएँ? कक्षा सातवीं में पढ़ाया जा रहा था वायुमंडल का संघटन। बच्चे मिड-डे-मिल की लंबी कतार से आने के बाद कहते थे कि 'इतनी धूप में खोपड़ी चटक जाती है। मैडम!' मैंने कहा, 'धूप तो बहुत तेज़ है।' तभी आशा बोली, "सावन-भादों की धूप होती ही तेज़ है।" मैंने पूछा, "क्यों होती है इस समय धूप तेज़?" बच्चे बोले, "बादल होते हैं तो ठंडक रहती है बादल हटते हैं तो धूप तेज़ लगती है।" मैने पूछा, "लेकिन गर्मी तो ज़्यादा मई-जून में होती है तो धूप अगस्त-सितंबर में ज़्यादा क्यों लगती है?" सभी बच्चे चुप थे। रोशनी ने कहा, "इस मौसम में पसीना ज़्यादा आता है और जल्दी सूखता भी नहीं है।" फिर सभी बच्चे इन बातों में मशगूल थे कि ये मौसम कितना कष्टदायक होता है और ऊपर से बिजली भी नहीं होती है। वायुमंडल के संघटन में उनको बताया गया था कि हमारे वायुमंडल में धूप के कण भी काफी मात्रा में होते हैं, जो सूर्य से आने वाले प्रकाश के विकिरण में सहायक होते हैं। मैंने उनसे कहा कि, "आजकल आपको आस-पास बरसात का पानी जमा दिखाई देता है। दो-तीन दिन धूप निकलती है और फिर पानी बरस जाता है। पानी बरस जाने मे वायुमंडल के धूल के कण पानी की बूँदों के साथ धरती पर आ जाते हैं। जिसमें सूर्य से आने वाला प्रकाश सीधा पृथ्वी पर आ जाता है और उनका विकिरण धूप के कणों द्वारा नहीं हो पाता है इसके कारण ही हमें बरसात के बाद जब धूप निकलती है तो वह बहुत तेज़ लगती है क्योंकि आसमान बिल्कुल साफ होता है। मई-जून के दिनों में धूप भरी गर्म हवाएँ, जिन्हें हम लू कहते हैं जो वायुमंडल को धूल से भर देती हैं। तेज़ और गर्म हवाएँ इस क्षेत्र के तापमान को भी बढ़ा देती हैं। जब हमें पसीना आता है तो वह सूखता भी जाता है। आजकल चारों तरफ पानी जमा है, धूप निकलती है तो वाष्पीकरण भी तेज़ हो जाता है। आप सभी जानते हैं कि वायुमंडल में जलवाष्प भी पर्याप्त मात्रा में पायी जाती है। जब जलवाष्प की मात्रा ज़्यादा होती है तो वायुमंडल में नमी ज़्यादा होगी और जिसमें हमें मौसम चिपचिपा लगता है।'' बच्चे बोले, "गर्मी ज़्यादा है, हवाएँ तेज नहीं चल रही हैं जिससे पसीना आता है तो सूखता भी नहीं है।" फिर मैंने उनसे पूछा कि, "आजकल कपड़े भी तो जल्दी नहीं सूखते हैं।' सभी ने हाँ में सिर हिलाया। आगे मैंने पूछा, "क्यों"? सबने एक स्वर में कहा, "हवा में नमी ज़्यादा है।" मुझे लगा मेरा पाठ पूरा हो गया।

इस प्रकार सप्ताह में तीन दिन पाँचवाँ पीरियड आठवीं कक्षा में भूगोल पढ़ाना होता था। एक दिन मिड-डे-मील में सोयाबीन की बड़ियाँ डाल कर तहरी बनी थी। कक्षा आठवीं के बच्चों को मुझे कृषि पढ़ाना था। बाहर खूब

ज़ोर की बारिश हो रही थी। इसलिए बाहर लंच के लिए कतारें नहीं लगी थीं। विद्यालय में बच्चों की उपस्थिति भी आज कम थी। बच्चों को एक-एक करके खाना लाने के लिए भेजा और रोज की तरह कहा, ''मेरी कक्षा में खाते जाओ और पढ़ते जाओ और हम तो आज तहरी में ही कृषि पढ़ेंगे। पहले बताओ कि इसमें क्या-क्या मिला है?'' लड़कियों ने बोलना शुरु किया चावल, सब्ज़ियाँ, टमाटर, सोयाबीन की बड़ी गरम मसालें, तेल और नमक। फिर उनसे पूछा, "चावल किस मौसम में बोया जाता है?'' सभी बच्चे चावल उत्पादक क्षेत्र में ही रहते थे इसलिए ज़ोर से उन्होंने कहा, "जून और जुलाई में।"

धान रोपण की सारी विधि भी इन बच्चों ने विस्तार से बतायी जो इनकी परिवारिक पृष्ठभूमि को बताती है। मैंने बताया, "जो फसलें जून-जुलाई में बोई जाती हैं और अक्तूबर-नवंबर में काट ली जाती है उन्हें हम खरीफ की फसल कहते हैं और चावल हमारे देश की एक प्रमुख खाद्यान फसल है।" इसके साथ ही मैंने भारत के मानचित्र पर चावल-उत्पादक क्षेत्रों को भी बताया। विद्यार्थियों को यह समझ में आ गया कि चावल इन सभी जगहों पर जब बारिश पर्याप्त होती है उस समय बोया जाता है। इसके बाद उनसे पूछा, "बच्चो, तुमने सोयाबीन की फसल देखी है?" सभी ने कहा, "नहीं"। यह स्वाभाविक था क्योंकि पूर्वी उत्तर प्रदेश के इस भाग में सोयाबीन का उत्पादन नहीं होता हैं। सोयाबीन एक तिलहन है। इसके पौष्टिक तत्वों की चर्चा की। इसके बाद मध्य प्रदेश को मानचित्र पर दिखाया जहाँ यह सबसे ज़्यादा पैदा किया जाता है और अब आई मसालों की बारी। मैंने सभी मसालों का एक-एक करते हुए नाम पूछा। सभी लड़कियाँ खाना बनाना जानती थीं। ज़्यादातर तो रोज़ खाना बनाकर ही विद्यालय

आती थीं। उन्होंने बड़े उत्साह में बताया – जीरा, तेज़पत्ता, दालचीनी, बड़ी इलायची, लौंग, काली मिर्च, धनिया, मिर्च, हल्दी और नमक। तभी नताशा ज़ोर से बोली, "इन सबसे सरसों के तेल में छौंक लगाते हैं।" मैंने कहा, "हाँ' और फिर पूछा, "सरसों किस मौसम में पैदा होती है और ज़्यादातर किस फसल के साथ बोयी जाती है?" ये इशारा उनके लिए काफी था। वे सब बोलीं ''गेहूँ के साथ बोयी जाती है। अक्तूबर-नवंबर में बोई जाती है।'' जब धान की फसल कट जाती है। मैंने बताया कि ये रबी की फसल है। गेहूँ भी रबी की फसल है जो अक्तूबर-नवंबर में बोई जाती है और मार्च-अप्रैल में काट ली जाती है। बच्चों में काफी उत्साह था क्योंकि पाठ हम मिलजुल कर पढ़ रहे थे। शिक्षिका की तरफ से कोई एक तरफा व्याख्यान नहीं किया जा रहा था।

उन्हें मैंने बताया कि मसाले ज़्यादातर दक्षिण भारत में विशेषकर केरल में होते हैं। किसी भी छात्रा ने दालचीनी, इलायची आदि के पौधे नहीं देखे थे। ज़्यादातर को तो पता ही नहीं था कि ये पौधों के अंश होते हैं। इन मसालों के पौधों को चित्र में दिखाया। प्राचीन काल में अरब देशों तथा यूरोपीय देशों में आने वाले व्यापारियों और मसाले के व्यापार की चर्चा की। बच्चे यह जानकर सोच में पड़ गए कि व्यापारी हमारे देश में गरम मसालों के बदले सोना देकर जाते थे।

नमक जो हमारे खाने को स्वादिष्ट बनाता है और हर जगह आसानी से उपलब्ध होता है उसकी कहानियाँ सुनाई कि नमक पुराने जमाने में कितनी नायाब चीज़ होती थी। भारत में भी नमक तटीय इलाकों खासकर गुजरात और तमिलनाडु के तट पर बनाया जाता है। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान गांधी जी के डांडी मार्च की भी चर्चा की। इस प्रकार ऐतिहासिक, राजनीतिक, आर्थिक और भौगोलिक घटनाओं का सामंजस्य स्थापित किया कि बच्चों की तहरी का स्वाद और भी ज़्यादा बढ़ गया और हमारा मिड-डे-मील अध्याय भी समाप्त हो गया।

भूगोल एक ऐसा विषय है जिसे अपने आसपास दिन-प्रतिदिन होने वाली प्राकृतिक घटनाओं और उनके साथ मानव की अंतर्क्रिया के सूक्ष्म निरीक्षण के द्वारा समझा जा सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षक विद्यार्थियों से विभिन्न विषयों पर चर्चा करें और उनको समझने का प्रयास करें। भूगोल की समझ विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि विद्यार्थियों की अपने आसपास का क्षेत्र का निरीक्षण (field observation) करने की कुशलता का सम्यक् विकास हो, चाहे वह धूप, वर्षा, बाढ़ आदि हो अथवा रहन-सहन, खान-पान, निवास इत्यादि। इन सभी में ही भूगोल की दो प्रमुख शाखाएँ प्राकृतिक भूगोल और मानव भूगोल समाहित है।

❑❑❑